पाठ ३ संवादहीन

पाठ का सारांश

1. अकेलापन और नया सहारा

यह कहानी एक वृद्ध ग्रामीण स्त्री, जिन्हें सब 'ताई' कहते हैं, के अकेलेपन की कहानी है । एक समय था जब उनका परिवार भरा-पूरा था, लेकिन समय के साथ बच्चे शहरों में जा बसे और ताई उस बड़े से सूने घर में अकेली रह गईं । उनके इस सूनेपन को दूर करने के लिए 'गनपत' नाम का व्यक्ति उन्हें एक पहाड़ी तोता लाकर देता है, जिसका नाम 'मिट्ठू' रखा जाता है ।

2. ताई और मिट्ठू का अनूठा संबंध

मिट्ठू जल्द ही ताई के जीवन का आधार बन जाता है। जो ताई खुद के लिए खाना बनाने में आलस्य करती थीं, वे अब नियम से मिट्ठू के लिए दाल-भात बनाती हैं । ताई घंटों मिट्ठू को अपने पुराने वैभव के दिनों की कहानियाँ सुनातीं और मिट्ठू भी 'राम-राम', 'सीताराम' और 'हर हर गंगे' कहकर उनसे संवाद करता । मिट्ठू उनके लिए केवल एक पक्षी नहीं, बल्कि ममता का केंद्र और संवाद का माध्यम था ।

3. कुंभ यात्रा और अनहोनी

एक बार ताई प्रयागराज में कुंभ-स्नान के लिए जाने का निर्णय लेती हैं । वे मिट्ठू की सुरक्षा को लेकर चिंतित थीं, इसलिए उसे जगन मास्टर की पत्नी (मास्टराइन) के पास छोड़ जाती हैं । जगन मास्टर एक आदर्शवादी व्यक्ति थे जिन्हें पक्षियों का पिंजरे में कैद रहना पसंद नहीं था । एक दिन उन्होंने मिट्ठू को खुली हवा का अहसास कराने के लिए पिंजरा खोल दिया, और मिट्ठू रोशनदान के रास्ते उड़ गया ।

4. ताई की वापसी और 'एवजी' मिट्ठू

ताई के लौटने का समय निकट आता देख गाँव वाले चिंतित हो गए। उन्हें डर था कि मिट्ठू के न होने का समाचार ताई सहन नहीं कर पाएँगी । गनपत के सुझाव पर मिट्ठू जैसा ही एक दूसरा तोता लाकर पिंजरे में रख दिया गया । जब ताई लौटीं, तो उन्होंने देखा कि वह 'एवजी' (बदले में लाया गया) तोता उनकी आवाज़ पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रहा था । वह बिल्कुल मौन था, जिससे कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' सार्थक होता है।

प्रमुख पात्र:-

- ताई: कहानी की मुख्य पात्र, जो अकेलेपन और स्मृतियों के सहारे जी रही हैं ।
- मिट्ठू: एक पहाड़ी तोता, जो ताई के जीवन में खुशियाँ और संवाद वापस लाता है ।
- जगन मास्टर: एक आदर्शवादी शिक्षक, जो स्वतंत्रता के कट्टर पक्षधर हैं ।

कहानी का संदेश:-

- यह कहानी केवल मनुष्य और पक्षी के प्रेम को ही नहीं दिखाती, बल्कि आधुनिक समाज में बुजुर्गों के अकेलेपन, पलायन (बच्चों का गाँव छोड़ना) और स्वतंत्रता की चाह जैसे गंभीर विषयों पर भी चोट करती है ।

शब्दार्थ:

- ढोर – पालतू पशु, जैसे गाय-भैंस आदि।
- सत्ता – शक्ति, अधिकार या अस्तित्व।
- प्रसंग – किसी घटना या विषय का संदर्भ।
- रोबीला – प्रभावशाली और रौबदार।
- तुनकमिजाज – जल्दी गुस्सा होने वाला।
- अतल – बहुत गहरा, जिसकी गहराई न मापी जा सके।
- कुशाग्र – बहुत तेज दिमाग वाला।
- पौ फटना – सुबह होने लगना, सूरज निकलने का समय।
- अचकचाना – अचानक चौंक जाना या घबरा जाना।
- निहाल – बहुत खुश और संतुष्ट होना।
- मिजाज – स्वभाव या आदत।
- साँकल – जंजीर या दरवाजे की चेन।
- टोह – खोज-खबर लेना या पता लगाना।
- देहरी/देहली – दरवाजे की चौखट का निचला भाग।
- वियोग – बिछड़ना या अलग होना।
- धर्म-संकट – सही निर्णय लेना कठिन होना।
- पशोपेश – दुविधा या असमंजस।
- आशंका – संदेह या डर।
- प्रायश्चित – गलती सुधारने के लिए किया गया कार्य।
- कौतूहलवश – जिज्ञासा के कारण।
- मशगूल – किसी काम में व्यस्त।
- आग्नेय – गुस्से से भरा।
- अनहोनी – अप्रत्याशित घटना।
- एवजी – किसी के बदले रखा गया व्यक्ति/वस्तु।
- अर्जन – कमाना या इकट्ठा करना।
- गुहार – सहायता के लिए पुकार।

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. कहानी में ताई और मिट्ठू का संबंध किस भाव को दर्शाता है?

    (क) परोपकार और त्याग

    (ख) ममता और स्नेह

    (ग) करुणा और क्रोध

    (घ) जिज्ञासा और सहायता

उत्तर: (ख) ममता और स्नेह

तर्क: ताई मिट्ठू को एक पक्षी के बजाय परिवार के सदस्य की तरह मानती थीं। वे उसे अपने हाथों से नहलातीं और उसके लिए विशेष रूप से भोजन तैयार करती थीं। यह अटूट ममता का प्रतीक है।

2. जगन मास्टर द्वारा मिट्ठू को पिंजरे से बाहर निकालना किस भावना या मूल्य का संकेत देता है?

(क) अनुशासन और परंपरा

(ख) उदासीनता और असावधानी

(ग) आत्मगौरव और विद्रोह

(घ) करुणा और नैतिकता

उत्तर: (घ) करुणा और नैतिकता

तर्क: जगन मास्टर एक शिक्षक थे और वैचारिक रूप से किसी भी जीव की गुलामी के खिलाफ थे। उनके लिए पक्षी को आजाद करना नैतिक रूप से सही कार्य था, जो उनकी करुणा को दर्शाता है।

3. मिट्ठू का उड़ जाना किस विचार को प्रस्तुत करता है?

(क) भोजन की खोज

(ख) प्रेम की आकांक्षा

(ग) स्वतंत्रता की चाह

(घ) पक्षियों में सम्मान की प्रवृत्ति

उत्तर: (ग) स्वतंत्रता की चाह

तर्क: तोते को ताई से प्रेम था, लेकिन जैसे ही उसे मौका मिला वह उड़ गया। यह दर्शाता है कि किसी भी जीव के लिए 'स्वतंत्रता' सबसे बुनियादी और सबसे बड़ी चाहत होती है।

4. ताई के जीवन के दुख का मुख्य कारण क्या था?

(क) सम्मान और प्रतिष्ठा में कमी आना

(ख) परिवार से दूरी और संवाद का अभाव

(ग) आर्थिक विपन्नता और निर्धनता

(घ) मिट्ठू के प्रति प्रेम और संवाद

उत्तर: (ख) परिवार से दूरी और संवाद का अभाव

तर्क: ताई अकेलेपन की शिकार थीं क्योंकि उनके बच्चे साथ नहीं रहते थे। घर में बात करने वाला कोई न होना ही उनके जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी (संवादहीनता) थी।

5. कहानी में मानव-समाज में व्याप्त किस विसंगति को उजागर किया गया है?

(क) मजबूरी (ख) कर्मपरायणता

(ग) अकेलापन (घ) संवादधर्मता

उत्तर: (ग) अकेलापन

तर्क: लेखक शेखर जोशी ने इस कहानी के माध्यम से आधुनिक समाज में बुजुर्गों की उपेक्षा और उनके अकेलेपन की समस्या को बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया है।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?" ताई इस वाक्य में किस 'नैया' की बात कर रही हैं? वे यह बात क्यों कह रही हैं?

   उत्तर: यहाँ 'नैया' का अर्थ ताई के जीवन रूपी नैया से है। ताई का भरा-पूरा परिवार बिखर गया था, बच्चे शहर चले गए थे और वे उस बड़े घर में बिलकुल अकेली रह गई थीं। अपने अकेलेपन और बुढ़ापे के कष्टों को देखकर वे चिंतित होकर ईश्वर से पूछती हैं कि अब आगे का जीवन कैसे कटेगा और उनका अंत समय कैसे पार लगेगा।

2. "धीरे-धीरे सब पराए हाथ में चला गया।" इस वाक्य में किस घटना की ओर संकेत किया गया है?

   उत्तर: इस वाक्य में ताई के संपन्न परिवार और कारोबार के बिखरने की ओर संकेत किया गया है। उनके बहू-बेटे शहर जाकर बस गए, बेटियों की शादी हो गई। घर की देख-रेख करने वाला कोई नहीं बचा, जिसके कारण धीरे-धीरे उनकी खेती-बाड़ी और घर की सुख-सुविधाएँ दूसरों (परायों) के नियंत्रण में चली गईं।

3. "ताई की सारी ममता मिट्ठू पर बरस पड़ी।" क्यों?

   उत्तर: ताई के पास अब अपना कहने वाला कोई नहीं था। जब गनपत उनके लिए एक प्यारा-सा पहाड़ी तोता (मिट्ठू) लेकर आया, तो ताई को अपने अकेलेपन में एक साथी मिल गया। अपनी संचित ममता, जो कभी अपने बच्चों और पोते-पोतियों के लिए थी, अब वे उस तोते पर लुटाने लगीं क्योंकि वही अब उनके सुख-दुख का एकमात्र सहारा था।

4. "अब ताई को इस बात की पूरी जानकारी रहने लगी थी कि किसके खेत में हरी मिर्चें तैयार हो गई हैं और किस पेड़ में फसल के आखिरी अमरूद बचे हैं।" इस वाक्य द्वारा ताई के व्यक्तित्व में आए परिवर्तनों के विषय में क्या-क्या पता चलता है?

   उत्तर: इस वाक्य से पता चलता है कि मिट्ठू के आने से ताई के व्यक्तित्व में सजीवता और उत्साह लौट आया था। जो ताई पहले अपने लिए खाना बनाने में भी आलस्य करती थीं, अब वे मिट्ठू की पसंद का ख्याल रखने के लिए सतर्क और सक्रिय रहने लगीं। उनमें जीने की नई इच्छा जागी और वे अपने परिवेश के प्रति अधिक जागरूक हो गईं।

5. "जगन मास्टर दूसरे मिजाज के आदमी थे।" जगन मास्टर का व्यक्तित्व कैसा था? कहानी में से उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर: जगन मास्टर आदर्शवादी, दयालु और स्वतंत्र विचारों के व्यक्ति थे। उन्हें किसी जीव को बंधन में देखना पसंद नहीं था।

   उदाहरण: जब उन्होंने मिट्ठू को पिंजरे में बंद देखा, तो उन्हें बेचैनी होने लगी। वे मिट्ठू को कैद से आज़ाद करने के लिए अपने घर का दरवाज़ा बंद करके उसे पिंजरे से बाहर निकालते थे ताकि वह कम से कम कमरे के अंदर आज़ादी महसूस कर सके। वे जीवों की स्वतंत्रता का सम्मान करते थे।

6. कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' किसके लिए सबसे अधिक सार्थक प्रतीत होता है— ताई, जगन मास्टर, मिट्ठू या नया तोता? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर: कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' सबसे अधिक नए तोते के लिए सार्थक प्रतीत होता है। पुराना मिट्ठू ताई के साथ बातें करता था, उनके सवालों के जवाब देता था और उनके दुख-सुख का साथी था। लेकिन ताई के लौटने पर जो 'एवजी' (नया) तोता लाया गया, वह ताई से कोई संवाद नहीं कर पाया। ताई के बुलाने पर भी उसका चुप रहना ही उस 'संवादहीनता' को दर्शाता है जिसने ताई के एकाकीपन को और गहरा कर दिया।

7. "अब ये ही दो प्राणी गाँव के बीच में स्थित बड़े घर के उस सूने खंडहर में एक-दूसरे को सहारा देने के लिए रह गए थे।" ताई के बड़े से घर को सूना खंडहर क्यों कहा गया होगा?

   उत्तर: ताई के घर को 'सूना खंडहर' इसलिए कहा गया क्योंकि जिस घर में कभी रौनक, नौकर-चाकर और बच्चों का शोर रहता था, वह अब एकदम खाली और खामोश हो गया था। घर की भौतिक स्थिति भी खराब हो रही थी और अपनों के अभाव में वह विशाल भवन केवल एक निर्जीव ढाँचा मात्र रह गया था, जहाँ केवल ताई और मिट्ठू ही बचे थे।

मेरे प्रश्न

नीचे कुछ उत्तर और उनके दो-दो प्रश्न दिए गए हैं। पहचानिए कि इनमें से कौन-सा प्रश्न उस उत्तर के लिए उपयुक्त है?

1. उत्तर : ताई के अकेलेपन को मिट्ठू ने सहारा दिया।

- प्रश्न क : ताई के सूनेपन को किसने सहारा दिया था?
- प्रश्न ख : ताई को मिट्ठू किसने भेंट में दिया था?

   → प्रश्न (क): ताई के सूनेपन को किसने सहारा दिया था?

2. उत्तर : ताई के लौटने से पहले मिट्ठू उड़ गया था।

- प्रश्न क : ताई के लौटने के बाद मिट्ठू कहाँ चला गया था?
- प्रश्न ख : ताई के प्रयागराज से लौटने से पहले क्या अनहोनी हुई?

   → प्रश्न (ख): ताई के प्रयागराज से लौटने से पहले क्या अनहोनी हुई?

3. उत्तर : गाँववालों को डर था कि ताई को सच्चाई जानकर सदमा लगेगा।

- प्रश्न क : गाँववाले ताई की वापसी से क्यों चिंतित थे?
- प्रश्न ख : गाँववाले मिट्ठू के उड़ने से खुश क्यों थे?

   → प्रश्न (क): गाँववाले ताई की वापसी से क्यों चिंतित थे?

4. उत्तर : कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' जीवन के मौन का प्रतीक है।

- प्रश्न क : कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' क्यों उपयुक्त नहीं है?
- प्रश्न ख : शीर्षक 'संवादहीन' का क्या भावार्थ है?

   → प्रश्न (ख): शीर्षक 'संवादहीन' का क्या भावार्थ है?

मेरे अनुभव मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने अनुभवों के आधार पर दीजिए—

1. "कभी-कभार गाँव में थोड़ी देर के लिए भी न्यौते-बुलावे में जातीं, तो दस बार खिड़की-दरवाजों की साँकलें टोहकर देखतीं..." ताई की तरह जब आप अपने घर या परिवार से दूर होते हैं, तो किसी वस्तु या व्यक्ति की चिंता आपको भीतर से कैसे परेशान करती है?

उत्तर: जब मैं अपने घर या प्रियजनों से दूर होता हूँ, तो मन में एक अनजाना डर और बेचैनी बनी रहती है। बार-बार यह विचार आता है कि कहीं कोई दुर्घटना न हो जाए या घर की कोई चीज़ असुरक्षित न रह गई हो। ताई की तरह, हम भी उन चीज़ों या व्यक्तियों के प्रति सुरक्षात्मक हो जाते हैं जिनसे हम भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं। यह चिंता हमें बार-बार फोन करने या सुरक्षा जाँच करने पर मजबूर कर देती है, क्योंकि हमारा मन वहीं अटका रहता है।

2. "आखिर वह भी तो बोलता-बतियाता प्राणी है।" क्या आप मानते हैं कि पशु-पक्षियों में भी संवेदनाएँ होती हैं? अपने किसी अनुभव का वर्णन करते हुए लिखिए।

उत्तर: हाँ, मैं पूरी तरह मानता हूँ कि पशु-पक्षियों में भी संवेदनाएँ और भावनाएँ होती हैं।

- अनुभव: एक बार मेरे घर के पास एक कुत्ता घायल हो गया था। जब मैं उसे रोज़ खाना देने लगा, तो वह मुझे देखते ही पूँछ हिलाने लगा। एक दिन जब मैं उदास बैठा था, तो वह चुपचाप आकर मेरे पास बैठ गया और अपना सिर मेरे पैर पर रख दिया। उस क्षण मुझे महसूस हुआ कि वह बिना बोले भी मेरा दुख समझ रहा था। पशु प्रेम, वफादारी और दुख को गहराई से महसूस करते हैं।

3. "गनपत ने ही एक सुझाव दिया कि मिट्ठू की ही सूरत-शक्ल का एक दूसरा तोता ले आया जाए ताकि ताई को भ्रम में रखा जा सके..." ताई को भ्रम में रखना उचित था या नहीं? तर्क सहित अपने विचार लिखिए।

उत्तर: मेरे विचार से ताई को भ्रम में रखना अनुचित था।

- तर्क: यद्यपि गनपत और गाँव वालों की मंशा ताई को सदमे से बचाना था, लेकिन प्रेम केवल सूरत-शक्ल से नहीं, बल्कि आत्मा और स्वभाव के जुड़ाव से होता है। ताई का मिट्ठू उनके साथ बातें करता था और उनके सुख-दुख साझा करता था। नया तोता केवल एक 'वस्तु' की तरह था जो बोल नहीं सकता था। झूठ चाहे कितना भी मीठा हो, वह सत्य की जगह नहीं ले सकता। अंत में ताई को जो मानसिक पीड़ा हुई, वह सच जानने से होने वाले दुख से कहीं अधिक गहरी थी।

4. "ताई सोच रही थीं कि उन्हें देखते ही मिट्ठू 'राम राम सीताराम' की रट लगाकर आसमान सिर पर उठा लेगा।" क्या कभी ऐसा हुआ कि आपने सोचा कुछ और, हुआ कुछ और? उस अनुभव को लिखिए।

उत्तर: हाँ, जीवन में कई बार ऐसी स्थितियाँ आती हैं।

- अनुभव: एक बार मैंने अपने मित्र के जन्मदिन पर उसे एक बहुत बड़ा सरप्राइज देने की योजना बनाई थी। मैंने सोचा था कि वह बहुत खुश होगा और हम खूब मज़ा करेंगे। लेकिन जब मैं उसके घर पहुँचा, तो पता चला कि उसके परिवार में किसी की तबीयत खराब थी और वह बहुत तनाव में था। मेरी सारी खुशी और उम्मीदें धरी की धरी रह गईं। तब मुझे समझ आया कि परिस्थितियाँ हमेशा वैसी नहीं होतीं जैसी हम कल्पना करते हैं।

5. "मिट्ठू अब पिंजरे में रहने के इतने आदी हो चुके थे कि उन्होंने बाहर आने की कोई इच्छा नहीं प्रकट की।" क्या प्राणी सचमुच पिंजरे में रहने के आदी हो सकते हैं? अपने उत्तर के समर्थन में अपने आस-पास से उदाहरण भी दीजिए।

उत्तर: हाँ, लंबे समय तक गुलामी या सीमित दायरे में रहने के कारण प्राणी अपनी 'स्वतंत्रता की इच्छा' खो देते हैं। इसे 'मानसिक गुलामी' कहा जा सकता है।

- उदाहरण: हमने अक्सर देखा है कि सर्कस के हाथियों को बचपन से पतली ज़ंजीर से बाँधा जाता है। बड़ा होने पर उनके पास इतनी ताकत होती है कि वे ज़ंजीर तोड़ सकें, लेकिन वे कोशिश भी नहीं करते क्योंकि वे मानसिक रूप से मान चुके होते हैं कि वे बँधे हुए हैं। इसी तरह, पिंजरे में पला पक्षी खुले आसमान से डरने लगता है क्योंकि उसे पिंजरे की सुरक्षा और बिना मेहनत के मिलने वाले दाने की आदत हो जाती है।

विद्या से संवाद

कहानी का सौंदर्य

संवादहीन कहानी में अनेक विशेष बिंदु हैं जो इसे प्रभावपूर्ण बनाते हैं। नीचे कहानी के कुछ विशेष बिंदु और उनके उदाहरण दिए गए हैं। आप भी कहानी से इसी प्रकार के एक-एक उदाहरण खोजकर लिखिए—

विशेष बिंदु	अर्थ	उदाहरण
चित्रात्मकता (दृश्य बिंब)	शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में स्पष्ट और जीवंत चित्र या छवियाँ बनाना।	मिट्ठू एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर अपने पंख तौलने में मशगूल रहे।
संवादात्मकता	कथ्य को आगे बढ़ाने के लिए, पात्रों के विचार, भाव आदि व्यक्त करने के लिए बातचीत और संवादों का प्रयोग।	“राम-राम कहो, सीताराम कहो।”
पुनरुक्ति	शब्दों की बार-बार पुनरावृत्ति से भाव की तीव्रता।	“कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!”
अतिशयोक्ति	किसी पात्र, घटना, भाव या वस्तु का वर्णन इतना बढ़ाकर करना कि वह असंभव या अविश्वसनीय लगे।	रेलगाड़ी में उसका भी टिकट लगेगा, आखिर वह भी तो बोलता-बतियाता प्राणी है।
लोकधर्मी भाषा	ग्रामीण, सहज, बोल-चाल की भाषा।	भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?
प्रश्नोत्तर शैली	पात्रों या लेखक द्वारा प्रश्न पूछना।	मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?

उत्तर:

विशेष बिंदु	अर्थ	कहानी से अन्य उदाहरण
• चित्रात्मकता (दृश्य बिंब)	- शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में स्पष्ट चित्र बनाना।	- "ढोली धोती को दोनों हाथों से सँभालते हुए वह बाग में एक पेड़ से दूसरे पेड़ के पास, ‘मिट्ठू आ! मिट्ठू आ!!’ पुकारते हुए पसीना-पसीना होते रहे।"
• संवादात्मकता	- पात्रों के विचार और भाव व्यक्त करने के लिए बातचीत का प्रयोग।	- "ताई ने अनायास ही मिट्ठू से सवाल कर बैठतीं, 'मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?'"
• पुनरुक्ति	- शब्दों की पुनरावृत्ति से भाव की तीव्रता दिखाना।	- "सीताराम! सीताराम!", "खुश रहो! खुश रहो!!", "मर जा! मर जा! मर जा!"
• अतिशयोक्ति	- किसी घटना या भाव का बहुत बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करना।	- "अकेले मिट्ठू क्या उड़े, आदर्शवादी जगन मास्टर के हाथों के सभी तोते उड़ गए।"
• लोकधर्मी भाषा	- ग्रामीण और सहज बोल-चाल की भाषा का प्रयोग।	- "ताई दो जून का एक जून चूल्हा फूँक लेतीं", "नैया पार लगना", "हाथ पीले कराना।"
• प्रश्नोत्तर शैली	- पात्रों द्वारा सवाल और जवाब के माध्यम से बात कहना।	- "ताई कहतीं— 'कैसे नैया पार लगेगी?' और मिट्ठू उत्तर देता— 'राम-राम कहो, सीताराम कहो।'"

कहानी का अंत

किसी कहानी का अंत अनेक प्रकार से हो सकता है जैसे—

1. सुखांत – जब कहानी का अंत प्रसन्नता, सफलता से होता है।
2. दुखांत – जब कथा का अंत दुख, वियोग, मृत्यु या हानि से होता है।
3. मुक्त अंत – जब कहानी स्पष्ट रूप से खत्म नहीं होती, बल्कि सोचने के लिए छोड़ दी जाती है।
4. अप्रत्याशित अंत – जब अंत अचानक और अप्रत्याशित रूप से सामने आता है।
5. यथार्थवादी अंत – जब कहानी का अंत जीवन की सच्चाई जैसा लगे।
6. प्रेरणात्मक अंत – जब कहानी के अंत में कोई प्रेरणा या सकारात्मक सोच दी जाए।
7. व्यंग्यात्मक अंत – जब कहानी का अंत व्यंग्य या कटाक्ष से किसी सत्य को प्रकट करता है।

आपके अनुसार 'संवादहीन' कहानी के अंत को किस श्रेणी में रखा जा सकता है? अपने उत्तर के कारण भी बताइए। आप इस कहानी का नया अंत किस प्रकार करना चाहेंगे?

उत्तर: 'संवादहीन' कहानी का अंत मुख्यतः दुखांत और यथार्थवादी अंत की श्रेणी में रखा जा सकता है।

- कारण: कहानी के अंत में मिट्ठू का उड़ जाना ताई के जीवन में गहरा वियोग और अकेलापन लेकर आता है, जो दुखांत को दर्शाता है। साथ ही, यह अंत पूरी तरह से जीवन की सच्चाई को भी प्रस्तुत करता है कि हर संबंध हमेशा साथ नहीं रहता और अकेलापन मानव जीवन की एक कड़वी सच्चाई है—इसलिए यह यथार्थवादी भी है।
- नया अंत (मेरी कल्पना): मैं इस कहानी का अंत प्रेरणात्मक बनाना चाहूँगा/चाहूँगी।

- ताई मिट्ठू के उड़ जाने के बाद बहुत दुखी होती है, लेकिन धीरे-धीरे वह अपने जीवन को नया अर्थ देती है। वह गाँव के बच्चों और अन्य पक्षियों की देखभाल करने लगती है। इससे उसका अकेलापन कम हो जाता है और वह समझ जाती है कि प्रेम बाँटने से जीवन फिर से खुशियों से भर सकता है।

विषयों से संवाद

1. "अंत में जगन मास्टर की <u>घरवाली</u> ने उनकी चिंता दूर कर दी।"

कहानी में रेखांकित पात्र का नाम नहीं दिया गया है। इसे कहीं 'मास्टरराइन', तो कहीं 'जगन मास्टर की घरवाली' कहा गया है। आपके अनुसार कहानी में ऐसा क्यों किया गया होगा?

उत्तर: कहानी में पात्र का नाम न देकर उसे उसके पद (मास्टरराइन) या संबंध (जगन मास्टर की घरवाली) से संबोधित करना ग्रामीण परिवेश की सामाजिक वास्तविकता को दर्शाता है। इसके पीछे निम्नलिखित कारण हो सकते हैं:

- ग्रामीण संस्कृति: गाँवों में अक्सर महिलाओं को उनके पति के नाम या उनके पेशे से पहचाना जाता है। यह उस समाज की रीति है।
- पात्र की गौण भूमिका: लेखक शायद यह दिखाना चाहते थे कि वह पात्र अपने स्वतंत्र अस्तित्व के बजाय अपने पारिवारिक संबंधों और सामाजिक पहचान से अधिक जुड़ी हुई है।
- सम्मान सूचक: 'मास्टरराइन' शब्द एक आदरसूचक संबोधन है जो शिक्षक की पत्नी के लिए उपयोग किया जाता है।

2. “गाँव के कई लोग कुंभ-स्नान के लिए प्रयागराज जा रहे थे”

(क) ‘कुंभ-स्नान’ एक सुप्रसिद्ध आयोजन है जिसमें करोड़ों लोग भाग लेते हैं। पता लगाइए—

- इसका आयोजन क्यों किया जाता है?

→ उत्तर: पौराणिक कथाओं के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान जब अमृत कलश निकला, तो उसकी कुछ बूंदें पृथ्वी पर चार स्थानों (प्रयागराज, हरिद्वार, उज्ज्वल और नासिक) पर गिरी थीं। इन स्थानों की नदियों में स्नान करने से पापों का नाश और मोक्ष की प्राप्ति होती है, इसी श्रद्धा के साथ कुंभ का आयोजन किया जाता है।

- पिछली बार इसका आयोजन कब और कहाँ हुआ था?

→ उत्तर: पिछली बार पूर्ण कुंभ का आयोजन 2019 में प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। (नासिक और उज्जैन में भी बीच के वर्षों में कुंभ के आयोजन हुए हैं)।

- अगला आयोजन कब और कहाँ होगा?

→ उत्तर: अगला महाकुंभ वर्ष 2025 में प्रयागराज में आयोजित होने वाला है।

(ख) मान लीजिए कि ताई आपके मोहल्ले में रहती हैं। वे कुंभ-स्नान के लिए कैसे गई होंगी? उनकी यात्रा का वर्णन लिखिए।

(संकेत— कहाँ से कहाँ तक की यात्रा, टिकट, यात्रा के साधन, संगी-साथी, खान-पान, ठहरना आदि।)

उत्तर: यदि ताई मेरे मोहल्ले से कुंभ-स्नान के लिए जातीं, तो उनकी यात्रा कुछ इस प्रकार होती:

- यात्रा का साधन: ताई गाँव के अन्य बुजुर्गों के साथ 'तीर्थयात्री स्पेशल' ट्रेन या बस द्वारा प्रयागराज के लिए रवाना हुईं।
- टिकट और साथी: उन्होंने पहले ही रेलवे स्टेशन से अपना टिकट आरक्षित करवा लिया था। उनके साथ मोहल्ले की तीन-चार सहेलियाँ और जगन मास्टर जैसे कुछ परिचित भी थे।
- खान-पान: ताई ने रास्ते के लिए घर से ही 'सत्तू', 'पुआ-पकवान' और 'अचार' बाँध लिया था। रास्ते में वे गंगा मैया के भजन गाते हुए समय बितातीं।
- ठहरना: प्रयागराज पहुँचकर वे संगम तट पर बने किसी 'अखाड़े' या अस्थायी टेंट (तंबू) में ठहरी होंगी, जहाँ चारों ओर संतों का प्रवचन और शंखों की ध्वनि गूँज रही थी।

(ग) आपके गाँव या नगर में कौन-सा मेला, उत्सव या पर्व मनाया जाता है? वहाँ का दृश्य, भीड़, श्रद्धा और वातावरण का वर्णन कीजिए। मेले में कैसी आवाज़ें, रंग, गंध, खान-पान, दृश्य और भाव होंगे?

(संकेत— उनका वर्णन पाँच ज्ञानेंद्रियों— देखने, सुनने, सूँघने, छूने और स्वाद महसूस करने के आधार पर कीजिए।)

उत्तर: मेरे नगर में प्रतिवर्ष 'दशहरा मेला' बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

- देखना (दृश्य): चारों ओर रंग-बिरंगी लाइटें, बड़े-बड़े झूले और रावण का विशाल पुतला दिखाई देता है। लोग रंगीन कपड़े पहनकर उत्साह से घूमते हैं।
- सुनना (आवाज़ें): लाउडस्पीकर पर बजते लोकगीत, बच्चों की सीटियों की आवाज़ और दुकानदारों का सामान बेचने के लिए जोर-जोर से चिल्लाना सुनाई देता है।
- सूँघने (गंध): वातावरण में ताज़ा जलेबियों की मिठास और चाट-मसाले की तीखी खुशबू तैरती रहती है। साथ ही हवन की सामग्री और अगरबत्तियों की गंध श्रद्धा जगाती है।

- छूना (स्पर्श): भीड़ में लोगों का एक-दूसरे से टकराना, ठंडी हवा के झोंके और लकड़ी के खिलौनों की खुरदरी बनावट महसूस होती है।
- स्वाद (चखना): मेले की गर्म-गर्म कुरकुरी जलेबियाँ, तीखे गोलगप्पे और मलाईदार कुल्फी का स्वाद जुबान पर चढ़ जाता है।

सृजन

1. "बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों के होकर रह गए"

अपना घर छोड़कर नए स्थान पर बस जाना आसान नहीं होता है। ताई के बहू-बेटों ने गाँव क्यों छोड़ा होगा? गाँव छोड़ते समय क्या-क्या सोचा होगा? अपना घर छोड़ने के लिए स्वयं को कैसे तैयार किया होगा?

उत्तर: ताई के बहू-बेटों द्वारा गाँव छोड़ने के पीछे कई व्यावहारिक और व्यक्तिगत कारण रहे होंगे:

- कारण: गाँव में खेती-बाड़ी और पुराने कारोबार अब शायद उतने लाभदायक नहीं रह गए थे। शहरों में आधुनिक सुख-सुविधाएँ, बच्चों के लिए बेहतर अंग्रेजी माध्यम के स्कूल और रोजगार के नए अवसर उन्हें आकर्षित कर रहे होंगे।
- सोच-विचार: गाँव छोड़ते समय उनके मन में एक तरफ भविष्य को लेकर उत्साह होगा, तो दूसरी तरफ ताई को अकेला छोड़ने का अपराधबोध (Guilt) भी रहा होगा। उन्होंने सोचा होगा कि शहर में सेटल होने के बाद वे ताई को भी वहीं बुला लेंगे।
- तैयारी: उन्होंने भारी मन से अपनी जड़ों से कटने का निर्णय लिया होगा। स्वयं को मानसिक रूप से मजबूत करने के लिए उन्होंने अपनी जरूरतों और बच्चों के सुनहरे भविष्य को ढाल बनाया होगा। धीरे-धीरे घर का सामान समेटना और यादों को पीछे छोड़ना उनके लिए एक कठिन भावनात्मक प्रक्रिया रही होगी।

2. "वहाँ बैठे एवजी मिट्ठू ने उन्हें देखकर कोई हरकत नहीं की"

ताई सोच रही थीं कि मिट्ठू 'राम राम सीताराम' कहेगा, लेकिन एवजी मिट्ठू चुप था। कल्पना कीजिए कि एक दिन असली मिट्ठू वापस आ गया। मिट्ठू ने नए तोते को देखकर क्या कहा होगा? आगे की कहानी लिखिए।

(संकेत— प्रारंभ कीजिए— "एक दिन आकाश में वही हरे पंख चमके... ")

उत्तर: एक दिन आकाश में वही हरे पंख चमके... सूरज की रोशनी में उनकी चमक देख ताई की धुंधली आँखों में एक उम्मीद जगी। वह हरा बिंदु धीरे-धीरे बड़ा हुआ और सीधा ताई की ओसरी (बरामदे) की ओर आ गया। वह असली मिट्ठू था!

पिंजरे के ऊपर बैठते ही उसकी नज़र अंदर बैठे उस मौन 'एवजी' तोते पर पड़ी। असली मिट्ठू ने अपनी गर्दन तिरछी की, पंख फड़फड़ाए और बड़े रौब से बोला, "अरे भाई! तू यहाँ बुत बनकर क्यों बैठा है? बोल— सीताराम! सीताराम!"

नया तोता, जो अब तक खामोश था, अपने संगी को देखकर चहचहा उठा। असली मिट्ठू फिर ताई की ओर मुड़ा और बोला, "ताई! गंगा नहा आईं? प्रसाद कहाँ है?" ताई की आँखों से खुशी के आँसू बह निकले। उन्होंने कांपते हाथों से पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया। अब घर में 'संवादहीनता' नहीं थी; असली मिट्ठू अपनी राम-कहानी सुना रहा था और नया तोता उसे दोहराना सीख रहा था। बड़े घर का वह खंडहर फिर से चहचहा उठा।

3. "अब ये ही दो प्राणी गाँव के बीच में स्थित बड़े घर के उस सूने खंडहर में एक-दूसरे को सहारा देने के लिए रह गए थे।"

आज घर जाकर अपने किसी बड़े या बुजुर्ग से बात कीजिए। उनसे पूछिए— "आप जब मेरी आयु के थे, तब समय कैसे बिताया करते थे; क्या-क्या बातें या काम करते थे? आदि।" उनके कहे हुए अनुभव अपनी पुस्तिका में लिखिए।

उत्तर: आज मैंने अपनी दादी जी से उनके बचपन के बारे में पूछा। उन्होंने बताया:

- समय बिताना: उस समय आज की तरह मोबाइल या टीवी नहीं थे। वे शाम को नीम के पेड़ के नीचे सहेलियों के साथ 'गुड्डे-गुड़ियों' का ब्याह रचाती थीं या 'गिट्टे' (पत्थर) और 'छुपम-छुपाई' खेलती थीं।
- काम: पढ़ाई के साथ-साथ वे घर के कामों में हाथ बँटाती थीं, जैसे— कुएँ से पानी लाना, चरखा कातना और त्योहारों पर घर की दीवारों पर 'मांडने' (चित्र) बनाना।
- अनुभव: दादी ने कहा कि उस समय सुख-सुविधाएँ कम थीं, लेकिन लोगों के पास एक-दूसरे के लिए बहुत समय था। कहानियाँ सुनकर और साथ बैठकर भोजन करने का आनंद ही कुछ और था।

4. “मिट्ठू ने फिर तिरछी आँख से रोशनदान के बाहर की दुनिया की ओर देखा और ये गए! वो गए!!”

मान लीजिए कि जगन मास्टर ने मिट्ठू की खोज के लिए एक विज्ञापन प्रकाशित किया है। अपनी कल्पना से वह विज्ञापन बनाइए।

(संकेत— आप समाचार पत्रों में प्रकाशित खोया-पाया या तलाश संबंधी विज्ञापन देख सकते हैं।)

उत्तर:

॥ तलाश: खोया हुआ तोता ॥

पहचान: गहरे हरे रंग का पहाड़ी तोता, गले में लाल कंठी।

विशेषता: बहुत साफ़ आवाज़ में ‘सीताराम’, ‘हर-हर गंगे’ और ‘राम-राम’ बोलता है। वह ताई के पुराने इतिहास की बातें भी दोहराता है।

कब से खोया: [तारीख] की दोपहर से, जगन मास्टर के निवास के पास वाले बाग से उड़ गया है।

निवेदन: यह तोता एक अकेली वृद्धा (ताई) के जीवन का एकमात्र सहारा है। यदि किसी को भी इसके बारे में कोई जानकारी मिले, तो कृपया तुरंत सूचित करें।

पुरस्कार: सही जानकारी देने वाले या तोता वापस लाने वाले सज्जन को उचित नकद इनाम दिया जाएगा।

संपर्क: जगन मास्टर (शिक्षक), पुराना मोहल्ला, गाँव [गाँव का नाम]।

मोबाइल: 98XXXXXX00

व्याकरण की बात

भाषा से संवाद

‘मिट्ठू’ शब्द का अर्थ होता है— मधुरभाषी, मीठा बोलनेवाला या तोता।

यह शब्द इतना अधिक प्रचलित है कि इसका प्रयोग एक मुहावरे में भी किया जाता है— ‘अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना’ जिसका अर्थ है ‘अपनी प्रशंसा आप करना’ या ‘अपने मुँह से अपनी बड़ाई करना’।

आप कुछ ऐसे मुहावरों की सूची बनाइए जिनमें किसी अन्य जीव-जंतु का उल्लेख किया गया हो, जैसे नीचे लिखे इस वाक्य में है—

“अकेले मिट्ठू क्या उड़े, आदर्शवादी जगन मास्टर के हाथों के सभी तोते उड़ गए।”

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

उत्तर:

मुहावरा	अर्थ	वाक्य में प्रयोग
• हाथों के तोते उड़ना	- अचानक घबरा जाना	- जंगल में अचानक सामने शेर को देखकर शिकारी के हाथों के तोते उड़ गए।
• गधे के सिर से सींग गायब होना	- पूरी तरह गायब होना	- पुलिस को देखते ही चोर भीड़ में ऐसे गायब हुआ जैसे गधे के सिर से सींग।
• घोड़े बेचकर सोना	- बेफ़िक्र होकर सोना	- परीक्षा खत्म होते ही राहुल घोड़े बेचकर सो रहा है।
• भीगी बिल्ली बनना	- डर के मारे दुबकना	- घर में शोर मचाने वाले बच्चे पिताजी के आते ही भीगी बिल्ली बन गए।
• ऊँट के मुँह में जीरा	- आवश्यकता से बहुत कम	- पहलवान के लिए दो रोटी तो ऊँट के मुँह में जीरे के समान है।
• मगरमच्छ के आँसू बहाना	- दिखावटी दुख	- जब उसकी चोरी पकड़ी गई, तो वह सजा से बचने के लिए मगरमच्छ के आँसू बहाने लगा।
• साँप सूँघ जाना	- एकदम चुप हो जाना	- गलती पकड़े जाने पर साकेत को जैसे साँप सूँघ गया।
• चींटी की चाल चलना	- बहुत धीमी गति से चलना	- अगर तुम चींटी की चाल चलोगे, तो हम गाड़ी नहीं पकड़ पाएँगे।
• कोल्हू का बैल होना	- बहुत कड़ी मेहनत करना	- बेचारा रामू परिवार पालने के लिए दिन-भर कोल्हू का बैल बना रहता है।
• मक्खियाँ मारना	- बेकार बैठे रहना	- पढ़ाई पूरी करने के बाद भी वह नौकरी नहीं कर रहा, बस दिन-भर मक्खियाँ मारता है।
• बगुला भगत होना	- कपटी व्यक्ति	- उस नेता पर भरोसा मत करना, वह तो बगुला भगत है।
• भेड़ चाल चलना	- दूसरों की नकल करना	- अपनी रुचि पहचानो, दुनिया की तरह भेड़ चाल चलने से कुछ हासिल नहीं होगा।

ध्वन्यात्मकता शब्दों से

"जगन मास्टर का ध्यान अचानक 'गीता-रहस्य' से हटकर मिट्ठू के पंखों की 'फड़फड़ाहट' पर गया।"

पक्षी के उड़ने पर पंखों के हिलने-डुलने से उत्पन्न ध्वनि 'फड़फड़ाहट' कहलाती है। ध्वनियों का आभास कराने वाले कुछ और शब्द लिखिए और उनसे नए वाक्य बनाइए।

उत्तर:

1. खटखटाना - दरवाज़े या लकड़ी पर प्रहार की आवाज़।

→ वाक्य - "रात के सन्नाटे में अचानक दरवाज़े की खटखटाट सुनकर सब डर गए।"

2. कलकल - बहती हुई नदी या झरने की आवाज़।

→ वाक्य - "पहाड़ों के बीच से बहती नदी की कलकल ध्वनि मन को शांति देती है।"

3. थपथपाना - हथेली से हल्के प्रहार की आवाज़ (शाबाशी या दुलार)।

→ वाक्य - "प्रतियोगिता जीतने पर पिताजी ने गर्व से मेरी पीठ थपथपाई।"

4. झंकार - पायल, वीणा या धातु के टकराने की आवाज़।

→ वाक्य - "जैसे ही नर्तकी ने कदम बढ़ाए, पूरे हॉल में पायलों की झंकार गूँज उठी।"

5. गरज - बादलों के टकराने की आवाज़।

→ वाक्य -"बादलों की गरज सुनकर मोर जंगल में नाचने लगे।"

6. चहचहाहट - पक्षियों के बोलने की मधुर आवाज़।

→ वाक्य - "सुबह-सुबह आँगन में चिड़ियों की चहचहाहट से ही मेरी नींद खुलती है।"

7. सनसनाहट - तेज़ हवा के चलने की आवाज़।

→ वाक्य - "तेज़ आँधी के कारण पेड़ों के पत्तों में अजीब सी सनसनाहट हो रही थी।"

8. हिनहिनाना - घोड़े की आवाज़।

→ वाक्य - "तबेले में बँधा घोड़ा प्यास के मारे हिनहिना रहा था।"

9. टपटप - पानी या द्रव के गिरने की आवाज़।

→ वाक्य - "रात भर हुई तेज़ बारिश के बाद अब भी छत से पानी की टपटप सुनाई दे रही है।"

10. गुनगुनाना - धीरे-धीरे गाने की आवाज़ या भौरों की ध्वनि।

→ वाक्य -"रीता काम करते समय अक्सर पुराने गाने गुनगुनाती रहती है।"

शब्द-युग्म

"अपनी अकेली जान के लिए ताई दो जून का एक जून चूल्हा फूँक लेतीं, व्रत-उपवास के बहाने चौका-चूल्हा टाल जातीं।"

उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। ये शब्द-युग्म हैं। वे शब्द जो जोड़े में लिखे जाते हैं, उन्हें शब्द-युग्म कहा जाता है। शब्द-युग्म मुख्यतः निम्न प्रकार के होते हैं—

- पुनरुक्त शब्द-युग्म, जैसे— बार-बार
- सजातीय शब्द-युग्म, जैसे— उठना-बैठना
- समानार्थक शब्द-युग्म, जैसे— दिन-प्रतिदिन
- विपरीतार्थक शब्द-युग्म, जैसे— दिन-रात

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द-युग्म नीचे दिए गए हैं। उनका अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए—

वक्त-बेवक्त, नियम-सिद्धांत, शादी-ब्याह, तीज-त्योहार

उत्तर: शब्द-युग्मों का अर्थ और वाक्य प्रयोग -

1. वक्त-बेवक्त

- अर्थ: समय और असमय, या किसी भी समय (अक्सर ज़रूरत के समय)।
- वाक्य: ताई मिट्ठू की भूख के लिए वक्त-बेवक्त अपने पास रोटियाँ और मिर्चें बचाकर रखती थीं।

2. नियम-सिद्धांत

- अर्थ: जीने के आदर्श, कायदे-कानून या उसूल।
- वाक्य: जगन मास्टर अपने नियम-सिद्धांत के पक्के थे, इसीलिए उन्हें मिट्ठू की कैद देखकर दुख होता था।

3. शादी-ब्याह

- अर्थ: विवाह के उत्सव या वैवाहिक आयोजन।
- वाक्य: पुराने दिनों की यादों में ताई अक्सर बड़े घरों में होने वाले शादी-ब्याह और ठाठ-बाट का वर्णन करती थीं।

4. तीज-त्योहार

- अर्थ: पर्व, उत्सव या धार्मिक त्यौहार।
- वाक्य: पहले हवेली में तीज-त्योहार पर बहुत रौनक रहती थी, पर अब वहाँ केवल सन्नाटा था।

खोजबीन शब्दों की

"ढीली धोती को दोनों हाथों से सँभालते हुए वह बाग में एक पेड़ से दूसरे पेड़ के पास, 'मिट्ठू आ! मिट्ठू आ!!' पुकारते हुए पसीना-पसीना होते रहे और मिट्ठू एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर अपने पंख तौलने में मशगूल रहा।"

उपर्युक्त अनुच्छेद में से खोजिए—

- ऐसा शब्द जो 'तंग' का विपरीतार्थक है।
→ उत्तर: ढीली
- ऐसा वाक्यांश जो एक मुहावरा है।
→ उत्तर: पसीना-पसीना होना
- ऐसा शब्द जो एक क्रिया है।
→ उत्तर: सँभालते, पुकारते, रहा
- ऐसा शब्द जो एक संज्ञा है।
→ उत्तर: धोती, बाग, पेड़, पंख
- ऐसा शब्द जो एक सर्वनाम है।
→ उत्तर: वह, अपने
- ऐसा शब्द जो एक विशेषण है।
→ उत्तर: ढीली, दोनों, दूसरे
- ऐसा शब्द जो एक कारक है।
→ उत्तर: को, में, से, पर
- ऐसा शब्द जो एक कर्ता है।
→ उत्तर: वह (जगन मास्टर), मिट्ठू

अर्थ के आधार पर वाक्य

आप जानते ही हैं कि अर्थ के आधार पर वाक्यों के कई भेद होते हैं जैसे— विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक, आज्ञावाचक (विधिवाचक), इच्छावाचक, संदेहवाचक और संकेतवाचक।

वाक्य का भेद	अर्थ/उपयोग	उदाहरण
1. विधानवाचक वाक्य	किसी घटना या स्थिति के बारे में कथन करने वाला वाक्य।	जगन मास्टर ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया।
2. निषेधवाचक वाक्य	किसी कार्य के न होने या मना करने का भाव व्यक्त करने वाला वाक्य।	मिट्ठू ने कोई हरकत नहीं की।
3. प्रश्नवाचक वाक्य	किसी बात को पूछने या जानने के लिए प्रयुक्त वाक्य।	मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?
4. विस्मयादिबोधक वाक्य	आश्चर्य, प्रसन्नता या दुख प्रकट करने वाला वाक्य।	मिट्ठू ने फिर तिरछी आँख से रोशनदान के बाहर की दुनिया की ओर देखा और ये गए! वो गए!!
5. आज्ञावाचक वाक्य	किसी को कुछ करने का आदेश या आग्रह व्यक्त करने वाला वाक्य।	राम-राम कहो, सीताराम कहो।
6. इच्छावाचक वाक्य	किसी आकांक्षा, आशा या इच्छा को प्रकट करने वाला वाक्य।	जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ!
7. संदेहवाचक वाक्य	किसी बात को लेकर शंका या अनिश्चितता प्रकट करने वाला वाक्य।	ताई के सूनेपन का साथी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा।
8. संकेतवाचक वाक्य	इसमें एक बात या कार्य का होना या न होना किसी दूसरी बात या कार्य के होने या न होने पर निर्भर होता है।	जब खेती-बाड़ी नहीं, कारबार नहीं, तो नौकर-चाकर किस दम पर टिकते!

अब आप भी अपनी पुस्तक में से प्रत्येक प्रकार का एक-एक वाक्य चुनकर लिखिए।

उत्तर:

1. विधानवाचक वाक्य - ताई की सारी ममता मिट्ठू पर बरस पड़ी।
2. निषेधवाचक वाक्य - ताई को घड़ी-भर के लिए भी मिट्ठू का वियोग सहन नहीं हो सकता था।
3. प्रश्नवाचक वाक्य - मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?
4. विस्मयादिबोधक वाक्य - जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ!
5. आज्ञावाचक वाक्य - मिट्ठू आ! मिट्ठू आ!!
6. इच्छावाचक वाक्य - भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?
7. संदेहवाचक वाक्य - शायद उनकी बेवकूफी पर हँसता रहता हो।
8. संकेतवाचक वाक्य - यदि किसी को भी इसके बारे में कोई जानकारी मिले, तो कृपया तुरंत सूचित करें।

मेरी पहेली

अपने समूह के साथ मिलकर ऐसी पहेलियाँ या प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित हों—

तोता, ताई, कुंभ, पिंजरा, कमरा, गंगा

भाषा संगम

"वह न जाने कहाँ से एक प्यारा-सा पहाड़ी तोता ले आया था।"

नीचे 'तोता' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

तोता (हिंदी); शुक: (संस्कृत); तोता (पंजाबी); तोता (उर्दू); तोतुं (कश्मीरी); तोतो (सिंधी); पोपट (मराठी); पोपट, सूडो (गुजराती); पोपट (कोंकणी); सुगा (नेपाली); तोता (बांग्ला); भाटौ (असमिया); तेनवा (मणिपुरी); शुआ (शुक); (ओड़िआ); चिलुक (तेलुगु); किळि (तमिल); शुकम्, तत्त (मलयालम); गिळि (कन्नड़)।

इनके अतिरिक्त यदि आप 'तोता' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।

उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

उत्तर:

शब्द	संस्कृत	अंग्रेजी (English)	अन्य प्रचलित नाम/भाषा
• तोता	- शुकः	- Parrot	- सुगा (भोजपुरी/मैथिली), पोपट (मराठी/गुजराती)
• ताई	- पितृव्यपत्नी	- Aunt	- काकी/बड़ी माँ (हिंदी बोलियाँ), पेरिअम्मा (तमिल)
• कुंभ	- कुम्भः	- Aquarius / Pitcher	- कलश (हिंदी), Pitcher Festival (अंग्रेजी में संदर्भ)
• पिंजरा	- पञ्जरम्	- Cage	- पिंजरा (मराठी/गुजराती), कैटो (कोंकणी)
• कमरा	- कक्षः	- Room	- खोली (मराठी), ओरडा (कन्नड़), रूम (हिंग्लिश)
• गंगा	- गङ्गा	- The Ganges	- पद्मा (बांग्लादेश में), भागीरथी (ऊपरी प्रवाह में)